IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 5, Ver. 1 (May. 2018) PP 98-100
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

मन्नेर वारलू : एक जनजातीय समुदाय

रेखा जौरवाल
व्याख्याता (इतिहास)
गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर , राजस्थान , 301001

वैश्विकरण, सूचना प्रोद्यौगिकी एवं तकनीक के इस वर्चस्ववादी युग ने आम आदमी को बिल्कुल निहत्था एवं असहाय बनाकर छोड़ दिया है। मानव सभ्यता को पृथ्वी की सबसे उन्नत एवं विकासशील सभ्यता माना गया है। किंतु विकास के सही मायने का आकलन करें तो इसके कई त्रासद पहलू भी हमारे सामने नज़र आते हैं। आज अनेक ऐसी प्राचीनतम संस्कृतियाँ हैं जो या तो मृतप्राय हैं या फिर विलीन होने के कगार पर हैं। इसी प्रकार की विस्तृत श्रेणी में आदि जनजातियाँ अथवा आदिवासी जैसे नामों से जानी जाने वाली जनजातियों में मानवता का बड़ा अंश शामिल है।

'आदिवासी' शब्द की उत्पत्ति 'आदि' और 'वासी' शब्द से हुई है। 'आदि' का अर्थ है 'मूल' जो प्राचीन काल से रहने वाले हैं और 'वासी' का अर्थ है निवासी इस तरह बना हुआ शब्द है आदिवासी। 'आदिवासी' शब्द अंग्रेजी के श्।इवतपहपदंसश (आदिम) श्प्दकपहमदवनेश (मूलनिवासी) के पर्याय के रूप में मान्य एवं स्वीकृत है। यह शब्द अपने आप में इस अर्थ को व्यक्त करता है कि देश विशेष का प्राचीनतम या आदिम मूल निवासी है। इसी के साथ साथ आदिवासी शब्द का लैटिन शब्द (ज्तपइन्न) के अंग्रेजी शब्द जतपइंस ट्राइबल के पर्याय के रूप में गढ़ा गया है। यह शब्द अपने आप में भ्रामक और अनिश्चित है। अनुसूचित जनजाति संविधानिक शब्द है।

भारत के हजारों वर्षों से जंगलों एवं पहाड़ों में रह रही आदिम जनजातियों ने खुले मैदानों तथा सभ्यता के केंद्रों में बसे लोगों से अधिक संपर्क किये बिना ही अपने अस्तित्व को बनाए रखा है पर, औद्योगिक सभ्यता का विकास संपूर्ण जनजातीय संस्कृति को पूरी तरह नष्ट करता आ रहा है। जब से तथाकथित आधुनिक सभ्यता के ध्वजावाहकों ने उनके समाज में घुसपैठ की है वे तब से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते चले आ रहे हैं। आदिवासी जीवन संस्कृति, दर्शन एवं पारंपरिक मूल्य उत्तर पूंजीवादी युग में बिखराव के कगार पर हैं, महाराष्ट्र के आदिवासी मन्नेरवारलू जनजाति समुदाय की स्थिति आज इसी प्रकार की है।

मन्नेरवारलू जनजाति आदिवासी होकर भी अपनी इतिहास संस्कृति, कला, भाषा, व्यवसाय, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन आदि की पहचान समाज के सामने नहीं बना पायी यह मन्नेरवारलू जनजाति के लिए दुखद बात है। इसी वजह से आदिवासी मन्नेरवारल्लू जनजाति भारत संविधान के अनुसार तो आदिवासी कहलाती है लेकिन समाज में अपनी पहचान आदिवासी के रूप में नहीं दे पा रही है।

मन्नेरवारलू शब्द की उत्पत्ति

'मन्नेरवारलू' भारत के महाराष्ट्र राज्य के नांदेड जिले के एक आदिवासी समुदाय का नाम है। जैसे 'आदिवासी' शब्द की उत्पत्ति 'आदि' और 'वासी' शब्द से हुई है। उसी तरह 'मन्नेरवारलू' शब्द को उत्पत्ति तेलुगू भाषा के 'मुन्नुरूकापू' शब्द से हुई है। मुन्नुरूकापू शब्द का अर्थ है 'मुन्नुर'' यानी ''तीन सौ'' और ''कापू'' यानी 'कृषि करने वाले' अर्थात 'कृषि करने वाले तीन सौ लोगों का एक आदिवासी समुदाय' । मुन्नुरूकापु शब्द का वर्तमान में मन्नेरवारलू शब्द में परिवर्तन हो गया है। यह जनजाति घुमक्कड है तथा 'मुन्नुरूकापु' को अनेक प्रकार से पुकारा जाता था जैसे कापोल्लु, मुनुरूल्लू, मन्नेरल्लू आदि लेकिन कुछ दिन के बाद इस शब्द का अपभ्रंश होते हुए इस मुन्नरूकापु लोगों के साथ और लगते हुए अंतिम में 'ल' प्रत्यय शब्द अनेकवचन के लिए लगा है। जैसे 'ड' और 'ष' को लगाकर मन्नेरवाडए मुन्नुरूवाड कहते थे बाद में उसे 'ल' प्रत्यय बहुवचन शब्द लगाकर 'श्मन्नेरवार', 'श्मन्नेरवाड' को 'मन्नेरवारलू'शब्द से पहचाना जा रहा है। अखिल महाराष्ट्र मन्नेरवारलू संघटना, पुणे और महाराष्ट्र मन्नेरवारलू सेवा संघ मुंबई के अनुसार अखिल महाराष्ट्र मन्नेरवारलू जनजाति संगठन पुणे और महाराष्ट्र मन्नेरवारलू सेवा संघ मुबंई के अनुसार मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय को राज्य सरकार ने घुमक्कड जनजाति यादी अण्क्रण् 27 में कोलाम और मन्नेरवारलू जनजाति को शामिल किया है और मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय यह भाषा के अलग अलग उच्चारण (मन्नेरवारल्लू आदिवासी समुदाय महाराष्ट्र में नांदेड जिला में पूर्व के आन्ध्रप्रदेश और आज के तेलगांना और कर्नाटक राज्यों के सीमा के पास रहने कारण वहाँ के भाषा के प्रभाव) के पश्चात अनेक नामों से जानी जाती है जैसे मन्नेरवारलू, मुन्नुरवार, मुन्नुरवाड व मनुरकापू आदि। लेकिन राज्य सरकार ने इन्हें मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय के रूप में मान्यता प्रदान की है और सूची में मन्नेरवारलू का नाम शामिल किया।

मन्नेरवारलू जनजाति का उदय और इतिहास :–मन्नेरवारलू जनजाति महाराष्ट्र के मराठवाडा के अंतर्गत नांदेड, औरंगाबाद, परभणी, जालना, हिंगोली, लातुर आदि जिलों में यह निवास करते हैं। मन्नेरवारलू जनजाति के हृदय में भिन्न–भिन्न ऐतिहासिक मत दिखाई देते हैं एवं अन्य विद्वानों ने भी इस संबंध में अपने पृथक–पृथक मत दिये हैं जैसे 'डॉ.म.ना.गंधम ने मन्नेरवारलू समुदाय के पहले राज्य सम्मेलन नांदेड 1983 में यह कहा की मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय तेलंगाना और आन्ध्रप्रदेश की एक 'मुनुरूकापू समुदाय' के वंशज के रूप में समझा जाता है और यह 'मुनुरुकापू समुदाय' मराठवाडा के कुछ जिले में भी आवास करते हैं। मुन्नुरूकापू यानी तेलुगू में 'मुनुर' यानी हिन्दी में 'तीन सौ' और 'कापू' यानी 'कृषि करने वाले' इन दो शब्दों को मिलाने से मुन्नरूकापू शब्द का अर्थ होता है 'कृषि करने वाले तीन सौ लोगों का एक समुदाय'। लेकिन इतिहास देखने से यह पता चलता है की मराठवाडा का भाग पूर्व आन्ध्रप्रदेश और आज के तेलगांना में 1724 से 1948 तक निजाम के नवाबो के आधिपत्य में था। 17 सितम्बर 1948 में यह मराठवाडा के जिले आन्ध्रप्रदेश और तेलंगाना से अलग और स्वतंत्र हो गया। लेकिन हैदराबाद मुक्ति संग्राम होने से पहले हो मन्नेरवारलू समाज का मूल स्थान महाराष्ट्र के मराठवाडा के नांदेड और तेलगांना के आदिलाबाद के जंगलों से उदय हुआ है। अतंतः हैदराबाद मुक्ति संग्राम के कारण यह मन्नेरवारलू जनजाति समुदाय आज के तेलगांना और महाराष्ट्र के दो राज्यों में बँट गया लेकिन मन्नेरवारलू समुदाय का उद्‌भव मुख्य रूप से महाराष्ट्र राज्य से ही हुआ हैं। डॉ. लक्ष्मीकांत जिरेवाड अपनी पुस्तक महाराष्ट्रातील आदिवासी मन्नेरवारलू जमात' में कहा है की मेरे द्वारा कुछ मन्नेरवारलू के लोगों से भेटवार्ता और साक्षात्कार करने से यह पता चला कि महाराष्ट्र के मन्नेरवारलू जनजाति मूल रूप में भारतीय वंश की जनजाति है और इनका मूल स्थान महाराष्ट्र है। यह मन्नेरवारलू जनजाति घुमकड जनजाति थी और जब भारत को आजादी नहीं मिली थी तथा राज्यों की सीमा का निर्धारण भी नहीं हुआ था तब से यह जनजाति आज के तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तामिलनाडू के जंगलों में व्यवसाय की खोज में भ्रमण करती थी। उसी समय कुछ लोग वहाँ के जंगलों में छूट गए और कुछ लोग फिर से महाराष्ट्र में आ बसे । महाराष्ट्र के मराठवाडा और कर्नाटक का कुछ भाग हैदराबाद (पूर्व आन्ध्रप्रदेश) के निजामों के अधिकार में रहने के कारण इस जनजाति को तेलुगू (आन्ध्रप्रदेश) की जनजाति भी कहा जाता है। लेकिन मुख्य रूप से यह महाराष्ट्र के नांदेड जिला के दक्षिण जंगलों में से ही उदित हुई थी।

मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय का मुख्य व्यवसाय कृषि था और यह आदिवासी समुदाय कृषि कार्य एक जगह रहते हुए नहीं करता था। एक जगह कुछ समय यानी दो तीन साल रहकर करते थे बाद में वहाँ की जमीन और स्थान छोड़कर दूसरे स्थान की ओर प्रस्थान करते थे। इसी तरह बारहवीं शती पूर्व महाराष्ट्र के आदिवासी मन्नेरवारलू समुदाय महाराष्ट्र छोड़कर तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक और तामिलनाडू के राज्य में भी भ्रमण किया करते थे।

इसी वजह से महादेव शास्त्री अपनी पुस्तक 'भारतीय कोश' के खंड 7 की प्रथम आवृत्ति में कहते हैं कि यह दृश्मन्नेरवारलू जनजाति तिरूमला हिल्स यानी आन्ध्र प्रदेश के दक्षिण भाग और तमिलनाडू के उत्तर भाग में रहने वाली आदिवासी जमात है। वह व्यवसाय की खोज में तमिलनाडू और आन्ध्रप्रदेश से तेलंगाना के आदिलाबाद जिले के मार्ग से महाराष्ट्र में आये हैं। जैसे की महादेव शास्त्री ने कहा है कि मन्नेरवारलू तमिलनाडू और आन्ध्रप्रदेश तेलगांना मार्ग से महाराष्ट्र में आया एक आदिवासी समुदाय है लेकिन इसी बात से कुछ वर्ष पूर्व अर्थात 18 वीं शती वर्ष पूर्व के इतिहास को देखने से यह पता चलता है कि यही मनुरूकापू आदिवासी समुदाय। जो मध्यकालीन युग के दौरान जंगलों में रहते समययोद्धाओं के रूप में या डाकुओं या हमलावर सेनाओं से गाँवों और इलाकों के संरक्षक के रूप में अपनी सेवायें देते थे।

शांतिकाल के दौरान वैसे योद्धा जो गांव के नजदीक रहे उन्होंने ग्राम प्रधान के रूप में गाँव को सेवा की या कृषि कार्य में लगे रहे। युद्ध काल के दौरान उन्होंने सैनिकों, गवर्नरों यानी नायकों और कई दक्षिण भारतीय राजवंशों में सेनाओं के कमांडरों के रूप में सेवा की। इस कापु समुदाय के लोग प्राचीन काल में जंगलों में रहते थे लेकिन जब मध्यकाल में यह जंगल के साथ–साथ डाकुओं से गाँवों के लोगों की रक्षा करने लगे थे तब गांव के लोगों से मिल रहे थे उसी के कारण वे धीरे धीरे गाँव में रहने लगे उसी समय उन मन्नुरूकापु समुदाय का साहस और डाकुओं से लड़ने की ताकत देखकर उन लोगों को कुछ पद भी मिले जैसे ग्रामीण और क्षेत्रीय सुरक्षा समितियों के दौरान 'वुरू कापू' प्रांत कापू 'डाकुओं से और खेती पशुओं का संरक्षण के दौरान 'पांटा कापूं' और गांव के प्रधान के रूप में 'पेद्दा कापू', 'चिन्ना कापू' आदि। इन सभी वीरतापूर्ण कार्य को देखते हुए तामिलनाडु के तंजावर राजा ने इस मनुरूकापू आदिवासी समुदाय को अपने राज्य में सैनिक के रूप में शामिल कर लिया था और इनका नाम 'तेलगा मुन्नुरूकापू सैनिक दल' रखा था तब से यह मुन्नुरूकापू समुदाय तंजावर राजा के तीन सौ सैनिकों के एक समुदाय के रूप जाना जाता था और यह आदिवासी युद्ध के दौरान युद्ध तो करते थे तथा जब युद्ध नहीं होता था तब कृषि का काम करते थे।

18 वीं शती के समय हैदराबाद के नवाबों ने तंजौर राजा से मदद मांगी थी तब राजा ने अपने इन तीन सौ तेलगा बटालियन को हैदराबाद के नवाबों के राज्य की रक्षा के लिए भेजा था। तब इन तीन सौ सैनिकों के समुदाय ने नवाबों को रक्षा और उनके राज्यों की रक्षा करते हुए उनकी युद्ध में सहायता की थी इसी वजह से वहाँ के नवाबों ने खुशी में इन लोगों को वापस लौटते समय कुछ सोना, पैसा और कुछ लोगों को जमीन, कुछ पद भी दिये थे जैसे जमीनदार, सूबेदार आदि । तब से तीन सौ समुदाय से कुछ ने वहीं अर्थात आज के तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि राज्यों में बस गये हैं। इसमें जो तेलंगाना राज्य के जंगलों में आवास किया, कुछ लोग वहीं से तेलंगाना के आदिलाबाद जिले के जंगलों के मार्ग से गुजरते हुए फिर से महाराष्ट्र के नांदेड जिले में स्थायी रूप से बस गये हैं।

वहाँ से पूर्ण तरीके से मराठवाडा के साथ–साथ महाराष्ट्र में फैल गये हैं। जैसे 'प्रो अनुमुलवाड वैजनाथ अपने शोध निबंध श्लोक साहित्य' में कहते हैं कि मन्नेरवारलू जनजाति प्रमुख रूप से महाराष्ट्र के नांदेड, औरंगाबाद और परभणी, जालना, अकोला, शोलापुर, नासिक, पुणे मुंबई और विदर्भ में यवतमाल, चद्रपुर, गडचिरोली, वर्धा आदि के साथ–साथ आज के तेलगांना के आदिलाबाद, निजामाबाद आदि जिलों में आवास करते हैं।

इस वक्तव्य के साथ देखा जाये तो आज मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय के लोग महाराष्ट्र के साथ–साथ तेलगांना और आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में भी मिलते हैं। लेकिन इनका मूल स्थान भारत के आदिवासी के साथ गिना जाता है और इन्हें महाराष्ट्र के आदिवासी मन्नेरवारलू जनजाति के रूप में देखा जाता है। 1976 में भारतीय संविधान में इन्हें (मन्नेरवारलू अनुसूचित जमात) 'मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय' 'जनजाति' के नाम से परिचित किया गया है। इस मन्नेरवालू आदिवासी समुदाय को 13 फरवरी 1978 के दिन महाराष्ट्र के अनुसूचित जमात आदेश विशोधन अधिनियम के आदिवासी सूची 1976 क्रमवारी 108 के भाग 27 क्रमांक में मन्नेरवारलू नाम से संबोधित किया गया है। राज्य सरकार की तरफ से मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय के पूर्ण रूप से विकास के लिए कुछ छूट दी गई है जैसे कालम 46 के अनुसार महाराष्ट्र राज्य में मन्नेरवारलू आदिवासी के लिए आर्थिक और शैक्षणिक व्यवस्था देने की घोषणा की गयी है । कालम 330, 332 के अनुसार राजनैतिक विभाग में –शामिल होने का आरक्षण दिया गया है। इस समुदाय के लोग राजनीति में भाग लेकर भारत के संसद में अपना दायित्व निभा रहे हैं। आज की इस स्थिति में बहुत लोग राजनीतिक पद ग्रहण करके अपने समाज समुदाय के लोगों को दुर्बल स्थिति में से अच्छी स्थिति में लाने का प्रयास कर रहे है। आज जो महाराष्ट्र के मन्नेरवारलू समुदाय को एक समय 'मुन्नूरूकापु' कहते थे लेकिन आज वही मुनूरूकापु शब्द का उच्चारण भी बदल गया जैसे मन्नेरवारलू आदिवासी घुमकड जनजाति थे उसी कारण वे एक जगह से दूसरी जगह जाते थे तब वहाँ की भाषा, परिवेश, परिस्थिति के कारण उनका 'मुनुरूकापु' शब्द का अपभ्रंश होकर कापोल्लू, मुन्नुरोल्लू, मन्नेरोल्लू, मुन्नुरवाड, मन्नेरवाड, मन्नेरवार आदि होते होते 'ल' प्रत्यय लगकर आज यह 'मुन्नुरूकापु' शब्द 'मन्नेरवारल्लू' आदिवासी समुदाय के रूप में उभरकर आयी है। मन्नेरवारलू जनजाति के इतिहास में और एक बात यह है की जैसे मुन्नूरुकापू का जो मुन्नूरू शब्द यह सिर्फ तीन सौ लोगों के समूह का ही प्रतीक नहीं तो उनके तीन सौ लोगों के साथ–साथ उनके घर का नाम यानी जैसे गणशेटवार, लखमावार, बोलचटवार, लखमावाड, लोलापोड, राउतवाड, रामोड, सुदेवाड, पल्लेवाड, जंगिलवार, माचेवाड, ठक्करवाड, जिरेवाड, कोलेवाड, अनुमूलवार, तोडांकुरवाड, तोटलोड, पुप्पुलवार, आरशेवाड, बागुलवाड आदि तीन सौ हैं। इस नामों से महाराष्ट्र में सिर्फ मन्नेरवारलू आदिवासी समुदाय परिचय मिलता है ।

संदर्भ सूची :

1 महाराष्ट्रातील आदिवासी मन्नेरवारलू जमात दृ प्राण्डॉण् लक्ष्मीकांत जिरेवाड प्र. सं 40

2 स्मरणिका, आदिवासी मन्नेरवारलू समाजाचे पहिले राज्य अधिवेशन नांदेड, 1983 (मन्नेरवारलू एक विचार) डॉ. म.ना. गंधम

3 महाराष्ट्रातील आदिवासी मन्नेरवारलू जमात– डॉ. लक्ष्मीकांत जिरेवाडप्र. सं 40

4 भारतीय संस्कृतिकोश–खंड.8 भारतीय संस्कृतिकोश मंडल, पुणे, प्रथम आवृत्ति, 1974– महादेवशास्त्री जोशी

5. लोकसाहित्य परिषद किनवट येथील शोध निबंध प्रा. अनमुलवाड वैजनाथ